28 / 04 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सदा सुहागिन होने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा सदा सुहागिन हूँ...

➳ _ ➳ एक बाबा की लगन में मैं आत्मा पहुँच जाती हूँ... वतन में...

→ अपने अविनाशी साजन के पास

➳ _ ➳ मेरे साजन प्यार से मुझे अपने समीप बुलाते हैं...

→ मेरे मस्तक पर अविनाशी स्मृति का तिलक लगाते हैं...

→ सिर पर लाइट का क्राउन पहनाते हैं...

→ और मेरे कानों में 'मन्मनाभव' का अनादि महामन्त्र सुनाते हैं..

■ ये महामंत्र अनहद नाद बन सदा मेरे कानों में गूंजता रहता है

▶ अब मैं किसी देहधारी के बोल सुनते हुए भी नहीं सुनती हूँ...

➳ _ ➳ मैं सजनी अपने अविनाशी साजन को प्रेम से निहार रही हूँ...

→ मेरे नयनों में, मुख में मेरे साजन की सूरत और सीरत समाई हुई है...

■ मैं आत्मा सजनी अपने अविनाशी साजन के अलावा किसी और देहधारी को देखती भी नहीं हूँ...

■ देहधारी तो कभी भी साथ छोड़ जाते हैं...

▶ पर ये अविनाशी साजन मेरा हाथ और साथ कभी नहीं छोड़ेगा...

■ मेरे मन मंदिर में एक साजन का ही मूरत है...

▶ मेरा मन अब किसी और में नहीं लगता है...

➳ _ ➳ संकल्प में भी किसी अन्य को स्मृति में भी नहीं लाती हूँ...

→ मेरे संकल्प में भी किसी देहधारी के प्रति लगाव नहीं..

→ जरा भी झुकाव नहीं..

→ मेरे स्वप्न में भी किसी की स्मृति नहीं...

■ बस तुम्हीं से बोलूं, तुम्हीं से सुनूं और तुम्हारा सुनाया ही बोलूं

▶ एक बाप दूसरा न कोई

➳ _ ➳ कितनी भाग्यवान आत्मा हूँ मैं...

→ स्वयं भाग्यविधाता ने मेरा भाग्य बनाया है...

→ अब माया मेरे तिलक को कभी मिटा नहीं सकती है..

■ मैं आत्मा सदा अविनाशी स्मृति का तिलक लगाये रहती हूँ...

→ मेरे लाइट के क्राउन को उतार नहीं सकती है...

■ क्योंकि सम्पूर्ण प्यूरिटी के कवच को सदा पहने रहती हूँ...

➳ _ ➳ मेरा साजन परमधाम से अपना सिंहासन छोड़ मुझे विश्व का सिंहासन देने आया है...

→ ज्ञान, गुण, शक्तियों से मेरे विकारों का नाश कर मुझे निर्विकारी बनाया..

→ पवित्रता की किरणों से मेरी अपवित्रता को भस्म किया...

■ मुझे सर्व खजाने और सर्व प्राप्तियों का अधिकारी बनाया...

➳ _ ➳ मैं सजनी सदा पवित्रता की चुनरी ओढ़े रहती हूँ...

→ अब इसमें जरा भी विकारों का दाग नहीं लगने देती हूँ...

→ अपवित्रता का अंश भी अब नहीं आ सकता..

➳ _ ➳ मैं आत्मा सदा अपने लाइट स्वरुप में रहती हूँ...

→ और हर कर्म में अपने को लाइट अनुभव कर रही हूँ...

■ अब मुझे किसी भी कार्य में मेहनत नहीं लगती...

→ सदा अपना आत्मिक लाइट चारों और फैला रही हूँ...

■ अब विनाशी देह के भान में जरा भी नहीं आती हूँ...

➳ _ ➳ सदा अपने को सर्व प्राप्ति सम्पन्न अनुभव कर रही हूँ...

→ मैं सदा सुहागिन बन डबल लाइट रहती हूँ...

■ एक अविनाशी साजन के प्रेम में मदमस्त रहती हूँ...

■ सदा अविनाशी ख़ुशी में झूमती रहती हूँ...

▶ सदा एक साजन की सजनी बन उसके प्यार में डूबे रहती हूँ...